B.Ed 2nd year

20/04/2020
Monday

समावेशी शिक्षा इकाई - 01

समायोजन एवं कुसमायोजन

समायोजन का अर्थ

"जब व्यक्ति अपनी परिस्थिति या वातावरण के साथ अपना तालमेल स्थापित करने में सफल हो जाता है, उसी को 'समायोजन' करना कहा जाता है।"

समायोजन की आवश्यकता

(1) मानसिक कष्ट व व्याधियों को दूर करने में सहायक।
(2) कक्षा में एकाग्रता बनाये रखने में।
(3) काम के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण
(4) अधिकतम उपलब्धि प्राप्त करने में सहायक।
(5) मान्यता / सबकी स्वीकृति प्राप्त करने के लिए समायोजन।

सुमायोजित व्यक्ति

"वह व्यक्ति जिसकी आवश्यकताएँ तथा तृप्तियाँ, सामाजिक दृष्टिकोण तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की स्वीकृति के साथ संगठित होती है 'सुसमायोजित व्यक्ति' कहलाता है।"

सुसमायोजित व्यक्ति / अच्छे समायोजन के लक्षण

(1) शारीरिक रूप से पूरी तरह स्वस्थ।
(2) संतुलित और व्यवस्थित व्यक्तित्व।
(3) सामाजिकता की भावना।
(4) सहयोगात्मक प्रवृत्ति का होना।
(5) स्पष्ट उद्देश्य।
(6) व्यावसायिक तथा सामाजिक कार्यदक्षता का उच्च स्तर।

Scanned with CamScanner

समायोजन की प्रक्रिया

1. कुसमायोजित बालकों की पहचान।
2. कुसमायोजन के दोषों का निर्धारण
3. कारणों की खोज
4. निदान कार्य
5. अनुवर्ती कार्य

कुसमायोजित व्यक्ति

"व्यक्ति का वातावरण के साथ ऐसा व्यवहार, जो न उसके भीतर के द्वन्द्व का समाधान करता है और न ही सामाजिक स्वीकृति प्राप्त करता है, 'कुसमायोजन' कहलाता है।"

कुसमायोजन के लक्षण

1- हीन भावना से ग्रसित।
2- सहनशीलता का अभाव।
3- चिन्ता में मग्न।
4- आत्मसुरक्षा का अभाव
(5) मानसिक रूप से अस्वस्थ।
(6) असामान्य व्यवहार।
(7) प्रसिद्धि के लिए सस्ती विधियों का प्रयोग।
(8) अपराधपूर्ण / असामाजिक कार्य करने वाला व्यक्ति।

कुसमायोजन के तत्व

1. तनाव
2. दुश्चिन्ता
3. दबाव
4. भग्नाशा
5. मानसिक द्वन्द्व

कुसमायोजन के कारण

1. प्राकृतिक वातावरण
2. भौतिक वातावरण
3. सामाजिक वातावरण
    1. पारिवारिक वातावरण
    2. सामुदायिक वातावरण
    3. विद्यालय का वातावरण
        1. शिक्षक से सम्बन्धित
        2. पाठ्यक्रम से सम्बन्धित
        3. पढ़ने वाले साथियों
        4. स्वयं से

Scanned with CamScanner

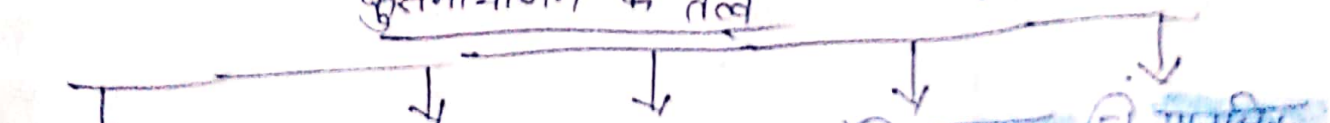

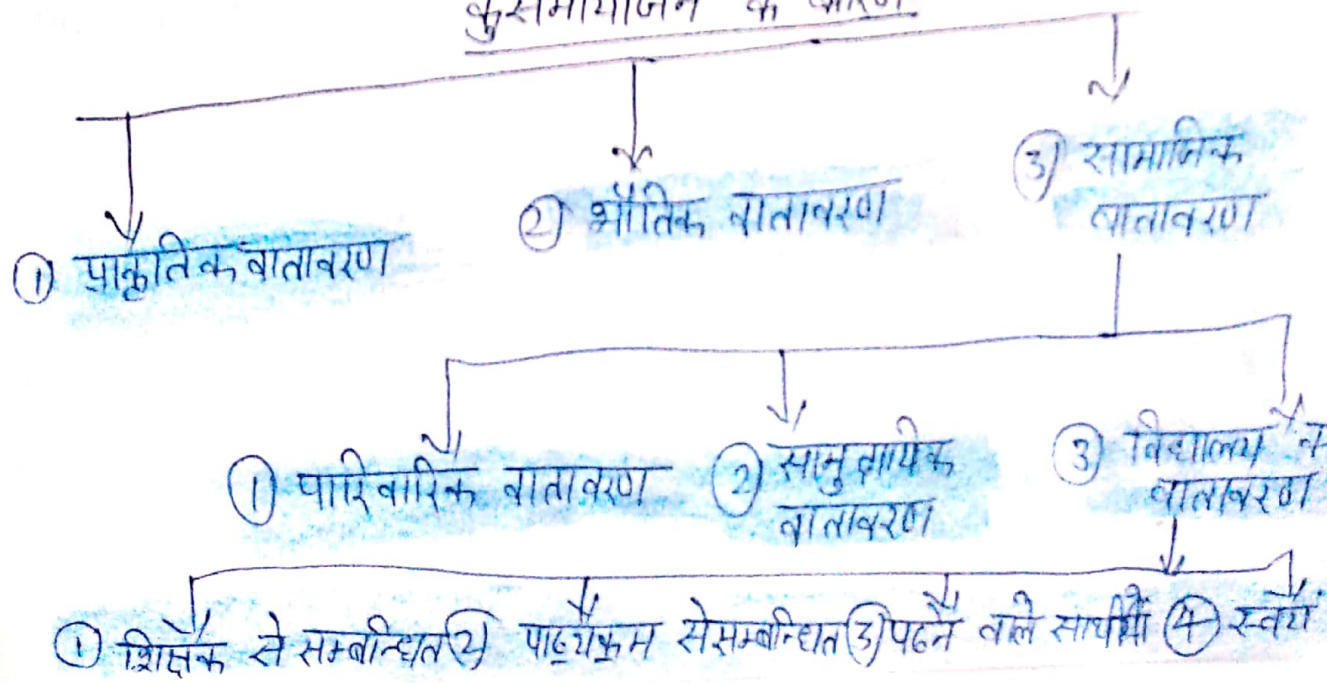

कुसमायोजन की रोकथाम के उपाय

1 – विद्यार्थियों को पहचानना। 6 –

2 – प्रेमपूर्ण व सहानुभूति पूर्ण व्यवहार करना।

3 – मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान की जानकारी देना।

4 – आर्थिक इतिहास तैयार करना।

5 – संघर्षों को चेतन स्तर पर दूर करने में सहायता प्रदान करना।

6 – विद्यार्थियों में धनात्मक प्रवृत्ति।

7 – भावनाओं का दमन न करना।

8 – अचेतन कामनाओं तथा इच्छाओं की जानकारी प्राप्त करना।

कुसमायोजन की रोकथाम में शिक्षक की भूमिका

(1) मनोवैज्ञानिक उपायों द्वारा विशेष निर्देशन।

(2) व्यावसायिक निर्देशन की आवश्यकता।

(3) संतुलित गृहकार्य।

(4) पारदर्शिता पूर्ण व्यवहार।

(5) पाठ्यक्रम रुचि के अनुरूप।

(6) मनोरंजन / खेल सुविधायें प्रदान करना।

(7) यौन शिक्षा की व्यवस्था।

(8) उत्तरदायित्व की भावना का विकास।

B.R.C. Deoband
Assis. Pro – Sapna Tyagi

Scanned with CamScanner